प्रश्न ओ अभ्यास

1. 'कला' क तात्पर्य की होइत अछि ?
2. भित्ति चित्रसँ अहाँ की बुझैत छी ?
3. अरिपन कोन अवसर पर बनाओल जाइत अछि ?
4. मिथिला चित्रकलाक आधुनिक विकास कहियासँ शुरू भेल ?
5. कोहबर घरमे काछु, बाँस आ नयना-योगिनक चित्र कोन अर्थमे बनाओल जाइत अछि ?
6. मिथिला चित्रकलाक विकासमे स्व॰ ललित नारायण मिश्रक योगदानक उल्लेख करू ।

मिथिला-चित्रकला

मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा अत्यन्त गौरवपूर्ण रहल अछि । चित्रकला, एहि समृद्ध परम्पराक अभिन्न अंग थिक । एहि कलाक श्रीगणेश कहिया भेल, ई कहब कठिन अछि । लोक साहित्ये जकाँ इहो एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी हस्तान्तरित होइत बढ़ैत गेल । मुदा वैदिक कालहिसँ एहि कलाक अस्तित्व अछि । वाल्मीकि रामायण, विद्यापतिक गीत ओ तुलसीकृत रामायणमे मिथिलाक चित्रकलाक चर्चा भेल अछि ।

कोनो कला अभिव्यक्तिकेँ सम्प्रेषित करबाक क्षमता थिक । तेँ अभिव्यक्तिक कुशल शक्ति कला कहबैछ । मनुक्ख अपन अभिव्यक्ति रेखा, वर्ण, ध्वनि, शब्द आदिक माध्यमसँ करैत छथि । मिथिलाक चित्रकलामे विभिन्न रेखा वा आकृति द्वारा लोक अपन आन्तरिक भावकेँ व्यक्त करैत छथि । गाम-घरमे रहनिहार जे नगरीय सभ्यतासँ दूर रहैत छथि आ विकासक मुख्य धारासँ जे अपेक्षाकृत कम सम्पृक्त छथि, तकरा लोक कहल जाइत अछि । एहन वर्ग अपन आनन्द, भाव-अनुभाव ओ जीवन शैलीकेँ जाहि कला द्वारा सहज रूपेँ व्यक्त करैत छथि ओ लोक चित्रकला कहबैछ । तेँ मिथिलाक लोक जीवनमे प्रचलित चित्रकलाकेँ मिथिला चित्रकला कहल जाइत अछि ।

एकर कलाकार गामहिमे भेटैत छथि । विशेष कऽ महिला लोकनि एकर रक्षिका छथि । मिथिलाक सांस्कृतिक उत्थानमे हिनका लोकनिक अवदान उल्लेखनीय अछि । मैथिल ललनाकेँ जँ संस्कृतिक पलना कही तँ कोनो अत्युक्ति नहि होयत । ओ लोकनि औपचारिक शिक्षासँ दूर छलीह । परिवार वा समाजे हुनका लेखेँ पाठशाला छल । माय-पितिआइन वा दादी आदि जेठजनीसँ ई कला सिखैत

छलीह । एहि कलामे जे अनेक निपुण ओ ओतेक सम्मानीया मानल जाइत छलीह ।

एकर सामग्री घर एवं बाड़ी-झाड़ीसँ प्राप्त करैत छलीह । बाँसक कमची वा बांगक पिहुवा ब्रशक काज कयलक । डिबियाक फुलिया एवं खापड़िक पेनमे जमल कारिखकेँ गोबरमे समेटि कने पानि मिला घोरि कऽ कपड़छन कऽ लेलनि आ कारी रंग तैयार भऽ गेल जकर प्रयोग बाह्य रेखाक लेल करैत छलीह । हरदिसँ पीयर रंग, सीमक पातसँ हरियर रंग, अपराजितासँ नीला रंग, सिंगरहारक डंटीसँ नारंगी रंग, पोरोक पाकल बीयासँ बैगनी रंग तैयार कऽ लैत छलीह । कहबाक तात्पर्य जे अपन लूरिसँ चित्रकलाक समस्त सामग्री घरहिमे तैयार भऽ जाइत छल । पर्दाक भीतरे एहि कलाक प्रदर्शन होइत छल । मध्यकालमे कर्णाट वंशक शासन कालमे एहि कलाक विकास तेजीसँ भेल । एहि वंशक संस्थापक नान्यदेव स्वयं कला प्रेमी छलाह, तेँ हुनका समयमे साहित्य, संगीत ओ विभिन्न कलाक मिथिलामे विकास भेल । तकर बाद ओइनवार वंशक शासन मिथिला पर भेल । एहि वंशक राजा शिवसिंह ओ रानी लखिमाक कला-प्रेम विख्यात अछि । एहि राजवंशमे विद्यापति सन साहित्य-संगीत ओ कला मर्मज्ञ साहित्यकार ओ कलाकार भेलाह । खण्डवाला कुलक राजा लोकनि सेहो एहिकलाकेँ संरक्षण प्रदान करैत रहलाह ।

वास्तवमे मिथिला सभ दिनसँ धर्म-प्रधान भू भाग रहल अछि । विवेच्य कला सेहो धर्मसँ संबद्ध अछि । विवाह, यज्ञोपवीत, मुण्डन आदि संस्कारक अवसर पर वा विभिन्न पाबनि-तिहारक अवसर पर मैथिल ललना विभिन्न चित्रसँ अपन संस्कृतिक अभिव्यक्ति करैत छथि ।

मिथिलामे मुख्यतः दू प्रकारक चित्र प्राचीन कालहिसँ प्रचलित अछि ओ थिक--

(1) भित्ति चित्र आ

(2) भूमि-चित्र अथवा अरिपन ।

भित्ति चित्रक अन्तर्गत गोसाउनिक घर ओ मोख पर तथा विवाहक बाद वर-कनिया जतय रहैत छथि जकरा 'कोहबर' कहल जाइत अछि, तकर देवाल पर चित्र बनाओल जाइत अछि । मिथिलाक जन-जीवनमे एहि चित्रक वैचारिक एवं व्यावहारिक महत्त्व अछि । कोहबर घरमे नयना-योगिन, बाँस, पुरैन, माँछ, काछु, सुग्गा, हाथी, कमलें, साँप, मयूर, आदिक चित्र बनाओल जाइत अछि । सभ चित्र प्रतीकात्मक अछि । उदाहरण स्वरूप बाँस वंशवृद्धिक प्रतीक तँ सुग्गा ज्ञानक प्रतीक अछि । काछुसँ वर-वधूक दीर्घायु ओ माछसँ पुत्रवान होयबाक कामना कयल जाइत अछि । नयना-योगिनक अर्थ होइत अछि जे स्त्री आँखिसँ योग करय । वधू अपन आँखिसँ अपन पतिकेँ सभ दिन वशमे राखथि, एहि बातक संकेत एहन चित्रसँ भेटैत अछि । मयूर प्रेमक प्रतीक थिक । कोहबरक कोनिया जतय वरक मित्र आदि बैसि गप्प करैत छथि पर अति सुरुचि पूर्ण चित्र बनाओल जाइत अछि । प्राचीन समयमे किशोरावस्थहिमे विवाह होइत छल, तेँ हुनका लोकनिक लेल कामशास्त्रक शिक्षा आवश्यक छल । कामदेव ओ रतिक चित्र ताहि दिस संकेत करैत अछि ।

पिठारसँ ढोरल देवाल पर लाल रंगसँ कोबर लिखल जाइत अछि । ई काज, एहि कलामे सिद्धहस्त महिला करैत छथि । कोबर लिखबाकाल लोकगीतमे निपुण महिला लोकनि संस्कारक गीत गबैत छथि ।

भगवतीक घरक देवाल पर आ मोखपर सेहो विभिन्न व्रत, उपवास, पावनि-तिहार वा धार्मिक अनुष्ठानमे भित्ति चित्र बनाओल जाइत अछि । कतेको ठाम तांत्रिक चित्रकलाक अनुसार महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा चामुण्डाक

चित्रांकन कयल जाइत अछि । आइ-काल्हि छिन्नमस्तिकाक चित्र प्रमुख रूपसँ बनाओल जाइत अछि । घर आदिक बाह्य देवाल पर सेहो नाना प्रकारक मनोहारी चित्र बनाओल जाइत अछि ।

मिथिलाक लोक चित्रकलाक दोसर सर्वाधिक प्रचलित चित्र अछि **अरिपन** । ई चित्र भूमि पर बनाओल जाइत अछि तेँ एकरा **भूमि-चित्र** सेहो कहल जाइत अछि । एकर प्रचलन उत्तर वैदिक कालहिसँ मिथिलामे अछि । अल्पना, आलेपन, आलिम्पन, मण्डल आदि विभिन्न नामसँ ई प्रचलित अछि । मिथिलांचलक प्रत्येक परिवारसँ कोनो शुभकार्यमे ई बनाओल जाइत अछि । उदाहरणस्वरूप तुसारीपूजा, चुमाओन, मडुअक, मधुश्रावणी, गवहा संक्रान्ति, कोजागरा, सुखरात्रि, देवोत्थान एकादशी आदि मांगलिक अवसर पर अरिपनक प्रयोजन होइत अछि ।

उपर्युक्त अवसर पर घरक महिला पिठार आ सिन्नुरक द्वारा आँगनमे अरिपन बनबैत छथि । प्रत्येक अवसरक अरिपनक स्वरूप भिन्न-भिन्न होइत अछि । एहि अरिपनक आध्यात्मिक ओ दार्शनिक महत्त्व अछि ।

मृत व्यक्तिक बालक जे श्राद्धकर्म करैत छथि, हुनक चुमाओनक लेल कुलदेवताक घरक आगू दक्षिण दिस अरिपन बनाओल जाइत अछि । एहन अरिपनमे सिन्नुरक प्रयोग नहि होइत अछि । चुमाओनक तुरन्त बाद ओकरा मेटा देल जाइत अछि जाहिसँ कर्त्ताक पुनः नजरि ओहि पर नहि पड़नि ।

मिथिलामे एहि चित्रकलामे पहिने दू जातिक लोक आगू छल, ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ । मुदा एम्हर दोसरो वर्ण एहि दिस अग्रसर भेल छथि, तेँ तीन गोट शैली सम्प्रति मिथिला चित्रकलामे प्रचलित अछि । ब्राह्मण शैली, कायस्थ शैली आ हरिजन शैली । तीनू शैलीमे किछु अन्तर अछि । ब्राह्मण शैलीमे विभिन्न रंगक अधिकाधिक प्रयोग होइत अछि । बाह्य रेखाकेँ विभिन्न रंगसँ भरिकेँ खूब

आकर्षक बनाओल जाइत अछि । एकर विषय वस्तु होइछ–कोहबर, डोली-कहार, जयमाल, राधा-कृष्ण ओ रामायण आ महाभारतक विभिन्न प्रसंग ।

कायस्थ शैलीमे रेखाक अधिकाधिक प्रयोग होइत अछि । विभिन्न रंगक रेखासँ एकरा सजाओल जाइत अछि । रंग भरबाक जगह पर रेखाक प्रयोग होइत अछि । एकरो विषय-वस्तु ब्राह्मणे शैली वला होइत अछि, मुदा आइ-काल्हि समसामयिक विषय-वस्तुक सेहो प्रयोग एहिमे होइत अछि ।

हरिजन शैलीक विषयवस्तु मूलतः लोक गाथा पर आधारित रहैत अछि । राजा सलहेश, मोतीराम, कुसुमा, दीनाभद्री, हाथी, घोड़ा, वृक्ष, फूल, पक्षी, पर्वत आदि एहि शैलीक विषय रहैत अछि । एहि शैलीक अन्वेषणक श्रेय छनि जर्मनीक कला-मर्मज्ञा एरिका स्मिथकेँ । ओ हरिजन परिवारक महिला लोकनिकेँ प्रोत्साहित कयलनि आ कागत पर चित्र बनयबाक प्रेरणा देलनि । एकरा गोदना शैली सेहो कहल जाइत अछि । आइ कतेको हरिजन कलाकार राष्ट्रीय पुरस्कारसँ सम्मानित छथि ।

मिथिला चित्रकलाक आधुनिक इतिहास 1934 ई॰ सँ शुरू होइत अछि । ओहि वर्ष भूकम्प आयल छल । मिथिला विशेष रूपेँ प्रभावित भेल । मधुबनी अनुमंडलक तत्कालीन एस.डी.ओ. विलियम जी आर्चर सर्वेक्षणक क्रममे गाम-घरक टूटल देवाल पर एहि चित्रकेँ देखलनि । एहि कलाकेँ देखि ओ मुग्ध भऽ गेलाह । मुदा ओहि ठामक लोकक लेल ई चित्र सामान्य छल । परम्परासँ सिखल एहन चित्र ओ सभ बरोबरि धार्मिक अनुष्ठान वा मांगलिक अवसर पर बनबैत छलीह । आर्चर साहेब ओकर अड़तालीस गोट फोटो खीचि ब्रिटिश पुस्तकालय केर इण्डिया हाउस, लंदन पठा देलनि । एही कलाक विकासक प्रथम चरण एही रूपेँ शुरू भेल ।

1948 ई.मे लंदनक आर्ट गैलरीमे भारतीय चित्रकलाक प्रदर्शनी लागल जाहिमे मिथिला चित्रकलाकेँ स्थान भेटल । प्रदर्शनीमे एकर बहुत प्रशंसा भेल आ ई चित्रकला लोकक नजरिसे आबि गेल । 1967 ई०मे मिथिलामे अनावृष्टिक कारणेँ घोर अकाल पड़ल । चारू कात हाहाकार मचि गेल । लोक अन्नक अभावमे मरणासन्न होमय लगलाह । भारत सरकारक हस्तशिल्प कलाक तत्कालीन अध्यक्ष पुपुल जयकर मधुबनी अयलीह आ हुनका बिहार राज्य शिल्प अनुसंधान संस्थाक निदेशक उपेन्द्र महारथी मधुबनी चित्रकलासँ परिचित करौलनि । श्रीमती जयकरकेँ आश्चर्य लगलनि जे एहनो निष्णात कलाकार सभ एहि भूभागमे भूखेँ तबाह भऽ रहल छथि । ओ बादमे भारतीय हस्तशिल्प बोर्डक मर्मज्ञ कलाकार महाराष्ट्री भास्कर कुलकर्णीकेँ एहि ठामक चित्रकलाक पर्यालोचन लेल पठौलनि । कुलकर्णी वास्तवमे एक महान आत्मा छलाह । ओ घरे-घरे सम्पर्क कयलनि मुदा मिथिलाक ब्राह्मण परिवारमे हुनको कोनो स्थान नहि भेटलनि । हुनक आकृति देखि केओ हिप्पी कहय तँ केओ बताह । किन्तु ओ तँ छलाह कर्मयोगी । किछु कायस्थ परिवारमे हुनका स्थान भेटल । ओ कतेको फोटो भारत सरकारक हस्तशिल्प कला केन्द्रकेँ पठौलनि । मुदा 1983 ई०मे दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे हुनक निधन भऽ गेलनि ।

मिथिला चित्रकलाक विकासमे स्थानीय संरक्षक किंवा उत्प्रेरकमे स्व० ललित नारायण मिश्रक अवदान उल्लेख्य अछि । स्व० मिश्र 1972 ई०मे भारत सरकारक विदेश व्यापार मंत्री भेलाह । ओ तुरन्त मधुबनीमे अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्डक क्रय-विक्रय एवं सेवा विस्तार केन्द्रक स्थापना करबौलनि । चित्रकलाक बिक्री शुरू भऽ गेल । कलाकारक प्रोत्साहन लेल सरकारी स्तर पर पुरस्कारक घोषणा कयल गेल । श्रीमती जगदम्बा देवी, सीता देवी, गंगा देवी, गोदावरी दत्त, महासुन्दरी देवी, शान्ति देवी ओ शिवन पासवानकेँ राष्ट्रीय पुरस्कारसँ

सम्मानित कयल गेल । पद्मश्री अलंकरणसँ विभूषित भेलीह-- जगदम्बा देवी, सीता देवी आ गंगा देवी । तुलसी सम्मानसँ सम्मानित भेलीह– स्व॰ गंगादेवी आ श्रीमती महासुन्दरी देवी । श्रीमती कर्पूरी देवीकेँ राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त भेलनि । ओना तँ भित्ति चित्र हो किंवा अरिपन, सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलक लोक-संस्कारमे रचल-बसल ओ प्रचलित अछि मुदा मिथिला लोक चित्रकलाक विकास स्व॰ मिश्रक कारणेँ मधुबनीमे बेसी भेल । प्रायः राष्ट्रीय अथवा राज्य स्तरीय पुरस्कार एहि जिलाक कलाकार लोकनिकेँ भेटल आ जिलाक विभिन्न गाम, जेना-जितवारपुर, राँटी, रसीदपुर, हरिनगर आदिमे सम्प्रति एहि कलाक केन्द्र चलि रहल अछि । इएह कारण अछि जे उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा नदी, पूबमे कोशी आ पश्चिममे गंडक नदीक बीचक भूभाग मिथिला रहितो मिथिला चित्रकलाकेँ मधुबनी चित्रकला सेहो कहल जाइत अछि । एक मात्र जिला मधुबनीमे एहि कलाक जतेक विकास भेल, ततेक अन्य जिलामे नहि । एहिठामक महिला कलाकार लोकनि अमेरिका, जापान, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन आदि विभिन्न देशमे आयोजित प्रदर्शनीमे भाग लैत रहलीह अछि ।

आब एहि कलाक व्यवसायीकरण भऽ गेल अछि । कागते पर नहि, विभिन्न वस्त्राभूषण पर ई पेन्टिंग बना लोक अपन जीविका चला रहल छथि तथा अपन सृजनशील दीप्तिक कारणेँ देश-विदेशमे ख्यात भेलाह ।

एहि चित्रकलाक विकासमे देशी-विदेशी कतेको कलाप्रेमीक सहयोग उल्लेखनीय अछि । स्व॰ ललित ना. मिश्र विदेश व्यापार मंत्रीक रूपमे देश एवं विदेशमे एहि कलाक सम्वर्द्धनक लेल उल्लेखनीय प्रयास कयलनि । रेल मंत्रीक रूपमे जयन्ती जनता एक्सप्रेसक प्रत्येक डब्बामे, आ बाहरोक रेलवे स्टेशन पर मिथिला चित्रकलाक बोर्ड लगबौलनि । संसद भवनमे सेहो मिथिला चित्रकला सुशोभित अछि । ओ विभिन्न प्रकारसँ कलाकार लोकनिकेँ प्रोत्साहित कयलनि ।

हिनका अतिरिक्त कतेको देशी आ विदेशी कलाप्रेमी ओ विद्वान् छथि जे एहिकला पर पोथी लिखि, वृत्तचित्र बना आ अनेक प्रकारसँ कलाकार लोकनिक मार्ग दर्शन कयलनि । सम्प्रति मिथिलांचलमे कतेको प्रशिक्षण केन्द्र चलि रहल अछि । महिला कलाकारक अतिरिक्त कतेको पुरुष कलाकार सेहो एहि दिस अग्रसर भेलाह अछि । आइ विश्व बाजारकेँ ध्यानमे राखि चित्रांकन कयल जा रहल अछि । पारम्परिक चित्रसँ हटि कन्या भ्रूण हत्या, बाढ़िक विभीषिका, एड्स समस्या, तिलक-दहेजक कुप्रथा आदि पर कलाकार लोकनि अपन कलाक प्रदर्शन कऽ रहल छथि । मधुबनी स्थित संकट मोचन कॉलोनीक श्रीमती रानी झा सदृश अनेकानेक महिला लोकनि एहन-एहन चित्रांकन कऽ एहि कलाक महत्त्वकेँ राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय बाजारमे बढ़ा रहल छथि ।

हँ, एक बात ध्यातव्य जे उपभोक्तावादी संस्कृतिक चपेटमे कतहुँ एहि कलाक मूल भावे ने नष्ट भऽ जाय । कलाकार लोकनि सतत् एहि बात पर सचेष्ट रहथि जे एकर वैशिष्ट्य नष्ट नहि भऽ जाय ।

मुदा एक बात जे एहि कलाक विकासमे बाधक अछि ओ थिक कलाकार लोकनिक गरीबी । ओ अपन कलाक उचित मूल्य प्राप्त नहि कऽ सकैत छथि । विवशतामे कम्मे दाममे हुनका सभकेँ अपन चित्र बेचय पड़ैत छनि । सरकार दिससँ कोनो बाजारक विशेष व्यवस्था नहि कयल गेल अछि । एकर अतिरिक्त एहि कलाक विडम्बना अछि जे कलाकार लोकनि अधिकांश अशिक्षित छथि । ओ अपन चित्रक संकेत नहि जनैत छथि आ जे व्यक्ति जनैत छथि, विद्वान् छथि, हुनका एकर लूरि नहि छनि । आब पढ़ल लिखल लोक सेहो एहि कला दिस साकांक्ष भेलाह अछि । तेँ विश्वास अछि जे मिथिला चित्रकला अपन गरिमाक रक्षा कऽ सकत आ उन्नतिक दिस सतत् अग्रसर होइत रहत ।

◆◆◆